ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-6* September-2020
Anthology : The Research

नारी शोषण : एक गंभीर समस्या

Female Exploitation: A Serious Problem

Paper Submission: 12/09/2020, Date of Acceptance: 25/09/2020, Date of Publication: 26/09/2020

सुप्रिया कुमारी
शोध छात्रा,
हिंदी विभाग,
वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय
अरहर, बिहार, भारत

सारांश

नारी शोषण एक गंभीर समस्या पुरातन युग से हीं शायद इस विषय पर विचार विमर्श करते आ रहे हैं पर शायद हीं कोई हो जो गहराई से इसे समझे। मेरे इस लेख को लिखने का उदेश्य यही रहा है की इस विषय पर गहराई से चिंतन मनन किया जाये। और कोई ठोस कदम उठाया जाय। आशा है आप सभी पाठको को मेरा ये भावनात्मक विचार पसंद आये।

Women exploitation has been a serious problem since the ancient era, perhaps there has been discussion on this subject, but there is hardly anyone who understands it deeply. The purpose of writing this article of mine has been to meditate deeply on this subject. And any concrete steps should be taken. Hope all of you readers like this emotional thought of mine

मुख्य शब्द : शोषण, जंजीर, पाप, गुलामी, लज्जा, समर्पित, गाँठ बाँधना, कोमल समस्या, परिस्थिति निदान वीरांगना साक्षय, विधमान,कष्ट सृजनकर्ता ।

Exploitation, chained, sin, slavery, shame, dedication, knot tying, soft problem, circumstantial diagnosis, heroic evidence, existing, suffering creator.

प्रस्तावना

हमारे मानव समाज में शुरू से ही नारियों की दशा दयनीय रही है इस पुरुष समाज में नारी को गुलामी की जंजीरों में बाँध कर रखा गया। उसका भरपूर शोषण किया गया। फिर भी नारी ने कभी अपने इस परिस्थिति से हार नहीं मानी और शोषण की जंजीरों को तोड़ कर पुरुष के साथ कदम से कदम मिलाने के लिए तैयार है और तैयार थी। आज हम इसी नारी विषय पर चिंतन मनन करें कि क्यों हमारे समाज ने नारी को हमेशा निम्न वर्ग में रखा उसे हीन दृष्टि से देखा गया क्यों नारी हमेशा से उपेक्षित रही है अगर हम इस विषय पर शोध करें तो हमने पाया है कि वही नारियाँ शोषित होती है, जो कोमल और सहृदय भाव वाली होती है। जो अपने परिवार और समाज के लिए समर्पित होती है और इन बेड़ियों को तोड़ने पर लज्जा और पाप होने की भावना को मन में गाँठ बाँध लेती है पर पूरी तरह समर्पित होने वाली ऐसी नारी को कोई नहीं समझ पाता और इनकी सहृदयता को ठेस ही पहुँचाने की कोशिश की जाती है इनकी इन कोमल भावनाओ को कोई जगह या स्थान नहीं दिया जाता है और मुझे कवि की कविता याद आती है कि,

कोमल है कमजोर नहीं तू,
शक्ति का नाम ही नारी है
जग को जीवन देने वाली
मौत भी तुझसे हारी है

अगर हम वैदिक युग से लेकर आधुनिक युग तक नारियों की दशा पर दृष्टि डालें तो हम पायेंगे कि हर युग में नारियों कि दशा बुरी नहीं रही है, पर इस समाज के द्वारा इसकी दशा को बुरा बनाने का हर समय प्रयास किया गया क्यूँ नारी को एक उपेक्षित वर्ग में रखा गया इस विषय पर हम सभी विश्व जगत के लोगों को गहन शोध करने की आवश्यकता है। हम किसी लेख में स्पष्टतः पूरी बात नहीं रख पाते जिससे नारी की स्थिति परिस्थिति के बारे में चिंतन किया जा सके। मैं चाहूंगी की इस विषय पर बहुत से लोग लिखने का प्रयास करें, ताकि नारियों की ओर उनकी दशा पर लोगों का ध्यान जाए। आइये हम अपने इस लेख में कुछ विचारनीय तथ्य पर नजर डालें। हमारे इस पुरुष प्रधान देश और समाज ने हमेशा से नारी को कमजोर बनाया है और कमजोर वर्ग में रखा है। हम आज इसी विषय पर चर्चा करते हुए आगे बढ़ेंगे अगर हमारा पुरुष

समाज नारियों को हीन दृष्टि से न देखें तो हमारा समाज हमारा देश विकाश शील होगा क्योंकि ये सच कहा गया है कि अगर एक पुरुष शिक्षित होता है तो मात्र अपने परिवार का भरण दृ पोषण करता है पर जब एक स्त्री शिक्षित होती है तो वो अपने पुरे समाज और परिवार को शिक्षित करती है और साथ ही अपने देश और राष्ट्र का मान सम्मान भी बढ़ाती है। ऐसी नारी जाति को दब्बू बनाकर घर में सजाने वाले पुरुष के लिए यह सन्देश है कि नारी को आगे बढ़ने दो और देश की शान को बढ़ने दो।

हमारे विश्व के इतिहास में नारियों कि गाथा एक से बढ़कर एक है पर हमारे इस सामाज में किसी ने इस पर विश्वास किया किसी ने नहीं किया अगर हम गौर करें तो हमारे वेद, पुराण वेद, ग्रन्थ तथा और भी पौराणिक कथाएँ है जिनमें नारी का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। नारी कभी प्रेम से वशीभूत हो सती के रूप में तो कभी दानवों का संहार करती शक्ति के रूप में तो कभी देश के प्रति कर्म निष्ठ भावना से ओत गेत होकर वीरगति को प्राप्त होती हुई नजर आती है आज हम ऐसी ही नारी के रूप को नजर में रखते हुए नारी को सम्मान के नजर से देखे। और उन्हें सम्मान प्रदान करें तो शायद नारी की दुखदायी कथा समाप्त हो जाए पर आज हमारे इस विश्व में ओजस्वी और वीरांगना नारियों की भी कमी नहीं है नारी कल भी कमजोर नहीं थी और आज भी कमजोर नहीं है पर हमारे इस पुरुषोत्व समाज ने हमेशा से नारी को कमजोर बनाया है और कमजोर वर्ग में रखा है ५

नारी समस्या

नारी समस्या क्या है क्यों ये नारी समस्या खत्म नहीं हो पा रही क्यों इस शब्द या वाक्य पर बस लम्बी चौड़ी लेख या शोध प्रबंध या उपन्यास ही रची गई। इस समस्या पर क्या कलम चलने से समस्या का निदान हो सकेगा नहीं इस लेख, उपन्यास या शोध को बस उसकी लेखन कला को ही सराहा गया और उसे बंद कर रख दिया गया इस नारी विमर्श पर विचार विमर्श दोनों ना ही इस विश्व से समाप्त हो रही है, ना ही इस देश से समाप्त हो रही है, न आस पास के लोगो के मन में सुधार कि स्थिति है न ही पारिवारिक सुधार हो रहा है और इस तरह से यूँ ही बस हम कलम चला कर चुप बैठ जाए तो कुछ नहीं होने वाला इस विचाराधीन तथ्य पर हमें एकमतता की जरुरत है। कब हम इस कथ्य को साक्ष्य करके दिखायेंगे। क्या सचमुच इस समस्या का निदान पूरा विश्व चाहता है या फिर बस शोषित नारी ही इस पर शोध और लेख लिखते हुए अपने हक की लड़ाई लड़ती रहेंगी। आज आधुनिक युग में नारियों की स्थिति में भले ही सुधर हो सरकार नये–नये नारी उत्पीड़न नारी शोषण को खत्म करने के कानून बनाये पर क्या हमारे समाज और हमारे देश से ये समस्याएं समाप्त हो रही है ? नहीं तो फिर क्या निदान है और बस एक यही निदान है कि हमारी महिला बहनों को ही स्वयं मजबूत होना पड़ेगा। अपने हक की लड़ाई खुद ही लड़नी है।

आज के इस आधुनिक दौर में अच्छी पढ़ी लिखी नौकरी करने वाली महिलायें भी मानसिक तनाव से घिरकर अवसाद में पड़ जाती है आखिर क्यों ? नारी एक खुशी कि तलाश में बर्बाद हो रही है। क्यों ? सारे रीति–रीवाज तौर–तरीके रिश्ते निभाने तक सबकी जिम्मेदारी इन्हें ही सौंपी गई है या इन सारे चीजों में इन्हें जबरन दबाव डाला जाता है एक तो नारी जाती ऐसे हीं सहृदय और कोमल होती है जिनमें ईश्वरीय गुण विधमान होते है , वो आप रुपी इसी तरह की जनमी है जो सबके बारे में फिक्र करती हैं। और एक समाज–परिवार में पल रहे अंधविश्वास में भी इन्हें समाहित होना पड़ता है। और शायद किसी और की परवाह और फिक्र उसे बर्बादी के कगार पर पहुंचाती है। हम आज कल के घटित तथ्यों पर नजर डालें तो हमें ये स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि हम नारी जाति के पंखो को काटते रहते है कि वो उड़ान न भरें और ये नारियां इतनी शक्तिशाली और बलवान होती है कि ये फिर भी हिम्मत नहीं हारती अपनी उड़ान फिर से भरना चाहती है अपने पैरों पर खड़ी होने वाली नारी भी इस समाज द्वारा सताई जाती है। इसीलिए आज तक युगों दृ युगों से चली आ रही नारी समस्या समाप्त नहीं हो पाती है आखिर क्यों एक स्वालम्बी नारी भी साताई जाती है। क्यों नारी अपने जीने की राह स्वयं नहीं निर्धारित कर पाती। ये अन्याय कब तक होता रहेगा ?

हम 1936 ई० की जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कामायनी महाकाव्य की ओर नजर डालें तो पाएंगे की उन्होंने तो 1936 ई० से लिखा लेकिन उसमें समाहित पात्र पात्राएँ और घटित घटनाओं को आदि काल से लिया गया है या रखा गया है कामायनी मानवता के विकास को लेती है, जिसमें उठती गिरती मानवता निरन्तर गतिमान रहती है। मानव मन का अंत विश्लेषण करते हुए प्रसाद जी ने उसमें अनेक भावनाओं का आरोह–अवरोह दिखलाया है। मानव के जीवन में नारी का प्रवेश एक महत्वपूर्ण घटना है। श्रधा मनु में एक नवीन भावना को जन्म देती है। उसकी इच्छा है मानवता विजयनी हो। प्रसाद जी अंत में मानवता की विजय घोषित करते है। पूर्ण मानव का चरित्रांकन उसका मुख्य विषय है ५

कामायनी के कथानक की अन्य मुख्य विशेषता यह है कि इसकी कथा में ऐतिहासिक सत्य का आधार तो लिया ही गया है उसमें मानवता का मनोवैज्ञानिक इतिहास भी उद्धारित किया गया है। मनु, श्रधा इड़ा सम्बन्धी प्राचीन कहानियों में जो रूपक तत्व निहित है उसी के सहारे कामायनी में प्रस्तुत कथा के आवरण में मानव के सामाजिक मनोवैज्ञानिक की कथा कही गई है। इस कथ्य में नारी जो मुख्य पात्रा के रूप में श्रद्धा है उसे सृष्टि–सृजनकर्ता के रूप में दर्शाया गया है। क्या इस चर्चित महाकाव्य से सब अनभिज्ञ है या जान कर भी सब अनजान बने रहना चाहते है। हालांकि जब नारी शुरू से ही कष्ट सहने के लिए ही जन्म ली है। वैसे ही इस महाकाव्य में भी श्रद्धा को भी कुछ समय के लिए मानसिक पीड़ा भोगनी पड़ी है।

इस महाकाव्य के प्रथम सर्ग श्रद्धा सर्ग में प्रसाद जी ने लिखा है –

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत पग नभ तल में
तुम पियूष श्रोत दृ सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में।

जयशंकर प्रसाद की ये पंक्तियाँ सदैव ही स्त्री के महत्व और उनको सम्मानित स्थान को दर्शाता है, ये कविता शायद उन्होंने तब लिखा था जब स्त्री को समाज में यथोचित स्थान नहीं मिला था। उसका एक ही कारन हो सकता है नारियों का अपने और शिक्षा के प्रति जागरूक न होना। बहुत कम ही औरतें पढ़ी–लिखी होती थी और जो होती भी थी वो अपने अधिकारों के लिए आवाज नहीं उठाती थी। फिर भी उनमें व्यवहारिक ज्ञान इतना होता था कि वो अपने परिवार और कर्तव्यों के प्रति जागरूक होती थी। यही कारण है कि स्त्रियों का स्थान शिक्षित जनों में उच्च होता था और "नारी तुम केवल श्रधा हो" जैसी कवितायेँ रची गई।

इसी प्रकार कई कवियों और उपन्यासकारों द्वारा नारी की दशा दुर्दशा, दयनीय स्थिती, शोषण इन सब पर चर्चा किया गया है। नारियों में तो आधुनिक युग आते–आते परिवर्तन देखे गए लेकिन हमारे विश्व और समाज में जो परिवर्तन दिखानी चाहिए वो नहीं हो पाई है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस लेख का उद्देश्य नारी की दशा दुर्दशा, दयनीय स्थिती, शोषण इन सब पर चर्चा किया गया है।

निष्कर्ष

हमारे हिंदी साहित्य जगत में सुविख्यात उपन्यासकार एवं कहानीकार यशपाल ने तो इस नारी विमर्श लेखन में कोई कोना नहीं छोड़ा उन्होंने तो ऐतिहासिक नारी, पौराणिक नारी और आधुनिक नारी, सभी युग की नारी और नारी विषय, नारी समस्या पर विचार विमर्श किया है और अपने मंतव्य द्वारा सभी युग की नारियों का चरित्र चित्रण किया है।

यशपाल जी ने हिंदी साहित्य में नारी समस्या पर गंभीर रूप से अपने उपन्यासों में लिखा है। इनकी यशपाल रचनावली पढ़ने पर महसूस होता है की इन्होंने देश के कोने दृकोने से नारी की समस्या को उठाकर अपने उपन्यासों में रचा है। इनके उपन्यासों में काल्पनिक पात्र से लेकर ऐतिहासिक पात्र भी है और कुछ सत्य घटना का भी इन्होने कथ्य प्रस्तुत किया है पर उसके पात्र को गोपनीय रखा गया है। इनके प्रमुख उपन्यास दादा कामरेड, झूठा, सच, मनुष्य के रूप, दिव्या, गीता है ५

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *यशपाल रचनावाली खंड 1 से लेकर 14 तक*
2. *जयशंकर प्रसाद कामायनी श्रद्धा सर्ग*
3. *राज किशोरए स्त्रीऋपुरुष रू कुछ पुनर्विचार*
4. *अर्चना वर्माए स्त्री का भविष्य यआलेखद्ध*
5. *विनय कुमारए पाठक स्त्री विमर्श*
6. *कल्पना वर्माए स्त्री विमर्श*